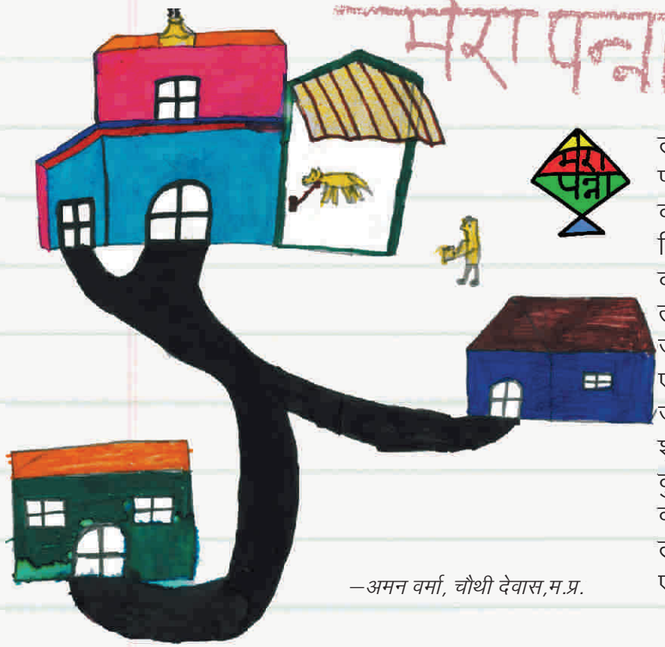

—अमन वर्मा, चौथी देवास,म.प्र.

लालू और कालू

मेरे घर में दो पिल्ले हैं। एक का नाम है लोकोअ ौरद ूसरेक ा सिम्बा ाह मद ोनोंक ो प्यार से लालू और कालू बुलाते हैं। अगर कोई लालू बोलता है तो लालू सिर उठाकर फिर नीचे कर लेता है, मानो पूछ रहा हो – क्या हुआ? यह नज़ारा देखकर जब हम ताली बजाते हैं तो वह प्रसन्न हो जाता है। जबह मल ाोगद ोनोंक ोख ाोलतेहैं त ोक ालू एक ओर जाता है और लालू दूसरी ओर। जब कोई नया आदमी आता है कालू भौंकना शुरू कर देता है। जब हमारे घर के बाहर कुत्ते भौंकने लगते हैं तो उनकी आवाज़ कालू के कान में घुस जाए तो वह भी भौंकने लगता है। अगर कभी दोनों एक-दूसरे को एक समय पर देख लें तो लड़ने लगते हैं।

—अवनीन्द्र कुमार, कलकत्ता, पश्चिम बंगाल

मछली रानी मछली रानी

मछली रानी, मछली रानी
क्यों पीती तुम ठण्डा पानी
सर्दी लग जाएगी तुमको
डॉक्टर अंकल आएँगे
मोटी सुई लगाएँगे
अब नहीं रोना मछली रानी
अब नहीं पीना ठण्डा पानी

—आनंद गुप्ता, पहली, मजना, टीकमगढ़, म. प्र.

—दमयन्ती,पहली, वर्धा, महाराष्ट्र

—सम्प्रीति, छुरकुटा, म.प्र.

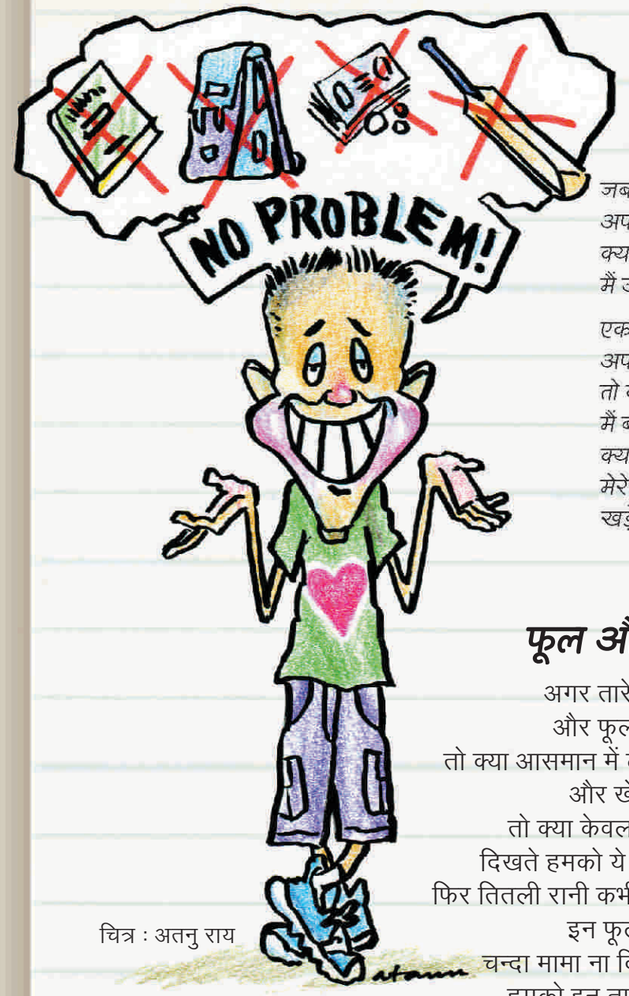

चित्र : अतनु राय

मैं भूला

जब मैं भूला
अपनी किताब
क्या फिकर
मैं उसे साझा कर लूँगा

एक दिन भूल जाता हूँ
अपना बस्ता
तो क्या हुआ?
मैं बाहर खड़ा हो जाऊँगा
क्या फिकर
मेरे पास दो पैर तो हैं
खड़े होने के लिए

अगर कभी पैसे भूल जाऊँ तो
चीज़ें नहीं खरीद पाऊँगा
क्या फिकर

अगर बल्ला भूल जाऊँ
उस दिन नहीं खेलूँगा
क्या फिकर

यदि मैं भूल गया
कभी अपनी खुशी तो
क्या हो?

कोई जवाब नहीं है!

—यश तिवारी, चौथी, कानपुर, उ.प्र.

फूल और तारे

अगर तारे होते फूल
और फूल होते तारे
तो क्या आसमान में लगते फूल
और खेतों में तारे
तो क्या केवल रोशनी में
दिखते हमको ये न्यारे फूल
फिर तितली रानी कभी ना आती
इन फूलों के पास
चन्दा मामा ना दिखते फिर
हमको इन तारों के पास

—गौरांशी चमोली, पाँचवीं, उत्तराखण्ड

—रेश्मा, इलाहबाद, उ. प्र.

एक दिन की बात है...

मेरी मम्मी मन्दिर जा रही थीं तो कोई वैन वाले ने मेरी मम्मी का एक्सीडेंट कर दिया और भाग गया। फिर मेरी मम्मी पाँच घण्टे तक रोड पर पड़ी रहीं। फिर मेरी मम्मी को किसी ने नहीं उठाया। फिर एक स्कूटर वाले भैया वहाँ से गुज़र रहे थे तो उन्होंने देखा कि मेरी मम्मी रोड पर पड़ी हैं। तो भैया ने मेरी मम्मी को ऑटो में लिटाके डॉक्टर के पास ले गए।

— भावना, होशंगाबाद, म. प्र.